MODEL PAPER

कक्षा –XII

अर्थशास्त्र (वाणिज्य) – Economics (Commerce)

Set – 5

खण्ड – II (Section- II)

लघु–उत्तरीय प्रष्न (Short-Answer type questions)

fun!'k & प्रष्न संख्या 1 से 10 तक लधु उत्तरीय प्रष्न है तथा प्रत्येक के लिए 3 अंक निधार्रित है ।

Instruction :- For questions 1 to 10 are short answer type and each question carries 3

marks.

---

1. Why is production possibility curve concave towards origin ? Explain.
   उत्पादन संभावना वक्र मूल बिन्दू की ओर अवतल क्यों होता है ? स्पष्ट कीजिए।
2. What do you mean by Giffin goods ?
   गिफिन वस्तुओं से क्या अभिप्राय है ।
3. What is real cost ? How does it differ with money cost ?
   वास्तविक लागात क्या है ? यह मौद्रिक लागत से किस प्रकार भिन्न है।
4. Distinguish between perfect competition and pure competition.
   पूर्ण प्रतियोगिता एंव शुद्ध प्रतियोगिता में अंतर स्पष्ट कीजिए ।
5. Distinguish between GDPFC and NDPFC.
   अंतर स्पष्ट कीजिए GDPFC और NDPFC.
6. What is liquidity track ?
   तरलता जाल क्या है ?
7. If additional investment is 100 Crore and MPC= $\frac{1}{2}$, how much

additional

income will be generated in the Economy ?

एक अतिरिक्त निवेष 100 Crore और MPC= $\frac{1}{2}$, हो तो अर्थव्यवस्था में कितनी अतिरिक्त आय

का सृजन होगा ?

8. Difference between Direct tax and Indirect tax ?

प्रत्यक्ष कर तथा अप्रत्यक्ष करों में अंतर ।

9. Explain the importance of fiscal deficit.

राजकोषीय घाटे का महत्व बताइए।

10. What is meant by balance of trade ?

व्यापार संतुलन से क्या अभिप्राय है?

Long Answer Type Question.

nh?k mÙkjh; i'u

funs'k & प्रष्न संख्या 11 से 15 तक दीर्घ उत्तरीय प्रष्न है तथा प्रत्येक के लिए 6 अंक र्निधारित है ।

Instruction :- For questions no 11 to 15 are long answer type and each question

carries 6 marks.

---

11. Explain the Geometrical Method of Price Elasticity of demand with diagram.

माँग की कीमत–लोच की ज्यामितिय विधि को सचित्र समझाइए।

12. Explain the law of Demand. What are its assumptions?

माँग के नियम की व्याख्या करें। इसकी मान्यातायें क्या है ?

13. What is meant by perfect competition ? What are its main characteristics ?

पूर्ण प्रतियोगिता से क्या अभिप्राय है? इसकी प्रमुख विषेषताएँ क्या है?

14. What do you mean by commercial bank ? What are the limitations of its credit creation ?

व्यापारिक बैंक से आप क्या समक्षते है? उसके साख निर्माण की सीमाएँ क्या है?

15. Explain progressive, proportional and regressive tax with examples.

प्रगतिशील,आनुपातिक एंव प्रतिगामी कर को उदाहरण सहित समक्षाइए।

Short Answer type questions.

y?k mÙkjh; i:'u

fun:'k & प्रष्न संख्या 1 से 10 तक लघु उत्तरीय प्रष्न है तथा प्रत्येक के लिए 3 अंक निर्धारित है ।

Instruction :- For questions no 1 to 10 are short answer type and each question

carries 3 marks.

---

1. Why is Production Possibility Curve Concave towards origin ? Explain.?

   उत्पादन संभावना वक्र मूल बिन्दु की ओर अवतन क्यों होता है, स्पष्ट कीजिए?

Ans:- Production Possibility Curve is Concave to the origin which signifies that if

we want to increase production of one goods (goods-X) then we have to

sacrifice production of second goods (goods-Y) and the sacrifice of Y goods

for every additional x-goods will continuously increase. Due to this reason,

the production possibility curve become concave to the origin.

सभी उत्पादन संभावना वक्र अपने मूल बिन्दु के प्रति अवतन होते है। इसका अभिप्राय यह है कि जब हम किसी एक वस्तु (xवस्तु) का उत्पादन बढ.ाना चाहते है तो हमे दूसरी वस्तु (yवस्तु) के उत्पादन का त्याग करना पडेगा और x वस्तु की प्रत्येक अतिरिक्त ईकाई के लिए y की उत्तरोत्तर अधिक मात्रा का हमें त्याग करना पडेगा जिसके कारण उत्पादन संभावना वक्र मूल बिन्दु की ओर अवतल हो जाता है।

2. What do you mean by Giffin Goods ?

   गिफिन वस्तुओं से क्या अभिप्राय है।

Ans:- Giffin goods are those inferior goods whose income effect is negative and price

effect is positive. Law of demand is not applicable in case of Giffin goods.

गिफिन वस्तु ऐसी निम्न कोटि की वस्तु हैं जिसका आय प्रभाव ऋणात्मक होता है तथा कीमत प्रभाव घनात्मक होता है। गिफिन वस्तु पर माँग का नियम लागू नही होता है।

3. What is Real Cost? How does it differ with Money cost ?

वास्तविक लागत क्या है ? यह मौद्रिक लागत से किस प्रकार भिन्न है ?

Ans:- Real cost- this concept was propounded by Marshall. Efforts and sacrifices

made in the production process create real cost. Real costs are also termed as

social costs because the society faces a number of difficulties during the

production process Money cost – cost of production measured in terms of

money is called the 'Money Cost' Money cost is the monetary expenditure

made by the producer for hiring various factors of Production. Money cost

is therefore the payment made for the factor in terms of money.

वास्तविक लागत – अर्थषास्त्र में वास्तविक लागत की धारणा का प्रतिपादन मार्षल ने किया था।

किसी उत्पादन प्रक्रिया के अन्तर्गत होने वाले कष्ट एवं त्याग वास्तविक लागत उत्पन्न करते हैं।

वास्तविक लागतों को सामाजिक लागत भी कहा जा सकता है। क्योंकि समाज को वस्तुओं के

उत्पादन में कष्ट का सामना करना पड़ता हैं ।

मौद्रिक लागत – किसी फर्म द्वारा एक वस्तु के उत्पादन में किये गये कुल मुद्रा व्यय को मुद्रा

लागत कहते हैं। दूसरे शब्दों में , उत्पत्ति के समस्त साधनों के मूल्य को यदि मुद्रा में व्यक्त कर

दिया जाये तो उत्पादक इन उत्पत्ति के साधन की सेवाओं को प्राप्त करने में जितना कुल व्यय

करता है, मौद्रिक लागत कहलाती है।

4. Distinguish between perfect competition and Pure competition.?

पूर्ण प्रतियोगिता एवं शुद्ध प्रतियोगिता में अन्तर स्पष्ट कीजिए ?

Ans:- Perfect competition:- Perfect competition is that market situation in which a

large number of buyers and sellers are found for homogeneous product.

Single buyer or the seller are not capable of affecting the prevailing price and

hence in a perfectly competition market, a single market price prevails for

the commodity.

According to leftwitch, “perfect competition is a market in which there are many firms selling identical products with no firm large enough relative to the entire market to be able to influence market price.”

Pure competition- the concept of 'Pure competition' is more real than the

concept of 'perfect competition' chamberlin has made a distinction between

'perfect competition' and 'Pure competition.'

> In the words of Chamberlin, " Pure competition means competition unallowed by monopoly elements. It is a much simpler and less exclusive concept than perfect competition for the latter may be interpretated to involve perfection in many other respects than in the absence of monopoly."

पूर्ण प्रतियोगिता – पूर्ण प्रतियोगिता बाजार की वह स्थिति होती है। जिससे एक समान वस्तु के बहुत अधिक क्रेता एवं विक्रता होतो है। एक क्रेता तथा एक विक्रेता बाजार कीमत को प्रभावित नही कर पाते और यही कारण है।कि पूर्ण प्रतियोगिता में बाजार में वस्तु की एक ही कीमत प्रचलित रहती है।

प्रो॰ लेफ्टविच के अनुसार "पूर्ण प्रतियोगिता वह बाजार स्थिति है जिसमें बहुत सी फर्में एक समान वस्तुएँ बेचती है और इनमें से किसी भी फर्म की यह स्थिति नहीं होती कि वह बाजार कीमत को प्रभावित कर सके ।"

शुद्ध प्रतियोगिता – शुद्ध प्रतियोगिता का विचार पूर्ण प्रतियोगिता की धारणा की तुलना में अधिक वास्तविक किन्तु संकुचित है।

पूर्ण प्रतियोगिता और विषुद्ध प्रतियोगिता में प्रोफेसर चैम्बरलिन ने निम्नलिखित शब्दों में भेद स्पष्ट

किया है।

" विषुद्ध प्रतियोगिता का अर्थ उस प्रतियोगिता से है जिस में एकाधिकारी तत्व पूर्णतया अनुपस्थित हो। पूर्ण प्रतियोगिता की तुलना में यह अधिक सरल तथ्य है क्योकि पूर्ण प्रतियोगिता में एकाधिकार की अनुपस्थिति के अलावा अनेक पूर्णताएँ पायी जाती है। "

5. Distinguish between GDPfc and NDPfc. ?

अंतर स्पष्ट कीजिए GDPfc और NDPfc.?

Ans:- NDPfc:- Net Domestic Income or Net Domestic Product at factor Cost

(NDPfc) is the sum total of factor incomes (rent + profit +wages + interest)

generated within the domestic territory of a country during a year.

NDPfc = NDP mp – Net Indirect taxes

Or

NDPfc = NDPmp- Indirect tax + subsidy

GDPfc: Gross Domestic product at factor cost (GDPfc) is the sum total of factor incomes (rent + interest + profit + Wages) generated within the domestic territory of a country, along with consumption of fixed capital during a year.

GDPfc = NDPfc+ Depreciation

Or

NDPfc = GDPfc – Depreciation

GDPFC- साधन लागत पर सकल घरेलु उत्पाद (GDPFC) घरेलु सीमा मे एक लेखा वर्ष में

सामान्य निवासियों द्वारा मजदूरी, लागत, ब्याज तथा लाभ के रूप में अर्जित आय तथा पूँजी

उपभोग मूल्य का जोड़ है।

साधन लागत पर सकल घरेलु उत्पाद GDPFC मे घिसावट व्यय भी सम्मिलित होता है।

जबकि साधन लागत पर शुद्ध घरेलु उत्पाद NDPFC में घिसावट व्यय शामिल नही होता ।

NDPFC+ घिसावट व्याय =GDPFC

अथवा

NDPFC=GDPFC- घिसावट व्यय

NDPFC - एक देष की घरेलु सीमा के अंतर्गत एक लेखा वर्ष में उत्पादित साघन आय (लगान+मजदूरी+ब्याज +लाभ) के जोड को शुद्ध घरेलु आय (NDI)या साघन लागत पर

शुद्ध घरेलु उत्पाद NDPFC कहा जाता है। दूसरे शब्दों में, साधन लागत पर शुद्ध, घरेलु उत्पाद

को ही शुद्ध घरेलु आय भी कहते है ,

इस प्रकार, (शुद्ध घरेलु आय) = (साघन लागत पर शुद्ध घरेलु उत्पाद)

6. What is liquidity Trap ?

तरलता जाल क्या है ?

Ans:- It is a situation in which speculative demand for money becomes perfectly

elastic. It is a situation of absolute liquidity preference. This term was

coined by prof. J.M.Keynes.

Liquidity appears at a very low rate of interest in which people prefer to hold

cash rather than invest in bonds. The fear of loss due to minimum rate of

interest may induce the public to refrain from further security purchases, the

alternative is simply to hold the additional cash as an idle asset

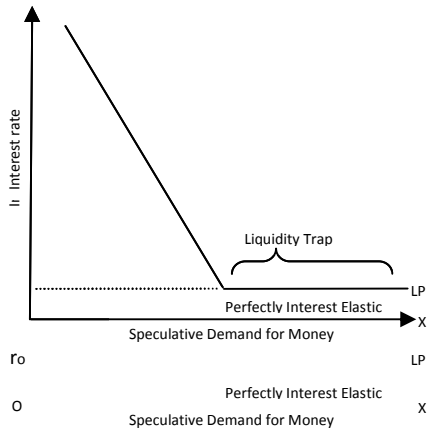

यह वह दषा है जिसमें सट्टे के लिए मुद्रा की मांग पूर्णतः लोचदार हे जाती है यह पूर्ण तरलता पसन्दगी की दषा है इस शब्दावली का प्रयोग प्रो॰ जे॰कीन्स द्वारा किया गया तरलता जाल न्यूनतम ब्याज दर (चित्र मे) पर प्राप्त होता है जिसे व्यक्ति बॉड आदि मे विनियोग करने की अपेक्षा धन को अपने पास नकदी के रूप में रखना पसन्द करते है। न्यूनतम ब्याज दर हानि की आषंका व्यक्तियों को आगे प्रतिभूतियॉ खरीदने से रोकती है जिसका विकल्प अतिरिक्त नकद को निष्क्रिय परिसम्पति के रूप में रखना होता है।

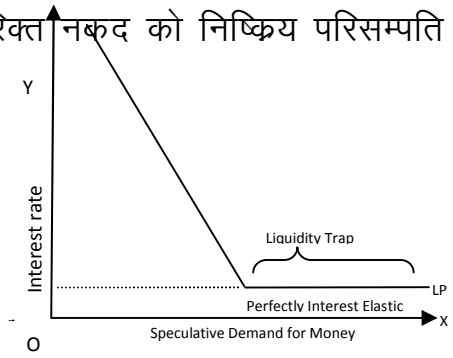

7. If additional investment is Rs 100 crore and MPC=$\frac{1}{2}$, how much additional
income will be generated in the economy.?

एक अतिरिक्त निवेष रू॰ 100 करोड़ तथा MPC$\frac{1}{2}$ हो तो अर्थव्यवस्था में कितनी अतिरिक्त आय का
सृजन होगा ?

Ans:- $\Delta Y = K\Delta I$

$$= \frac{1}{1-MPC} \times \Delta I$$

$$= \frac{1}{1-\frac{1}{2}} \times Rs100\ Crores$$

$$= \frac{1}{\frac{1}{2}} \times Rs\ 100\ Crores$$

= 2 × Rs 100 crores

= Rs 200 Crores

8. Difference between Direct Tax and Indirect Tax. ?

प्रत्यक्ष कर तथा अप्रत्यक्ष करों में अंतर ?

Ans:- Distinction between Direct tax and Indirect tax .

Direct Taxes	Indirect Taxes
1. They are directly paid to the government by the person on whom it is imposed. 2. They are generally progressive. The rate of tax increases with increase In income. 3. The can't be shifted on to others.	1. . They are paid to the government by one person but their burden is borne by another person. 2. They are generally regressive the rate of tax decrease as Income increases. 3. The can be shifted on to others.

प्रत्यक्ष कर	अप्रत्यक्ष कर
1. ये कर जिस व्यक्ति पर लगाये जाते हैं वह व्यक्ति ही इन करों का भुगतान करता है। इन करों को किसी अन्य पर टाला नहीं जा सकता हैं। 2. ये कर प्रगतिषील होते है और आय में वृद्धि के साथ इनमें वृद्धि होती है । 3. ये अनिवार्य भुगतान होते हैं। इनसे बचा नही जा सकता	1. जिस व्यक्ति को यह कर चुकाना पडता है। वह इसे दूसरे व्यक्ति पर डाल सकता है। 2. ये कर प्रगतिषील नहीं होते और सभी आय वर्ग के लोंगेां को समान रूप से वहन करने पड़ते है। 3. यदि व्यक्ति उन वस्तुओं कर लगाया गया है तो वह अप्रत्यक्ष कर से बच सकता है।

9. Explain the importance of fiscal deficit. ?

राजकोषीय घाटे का महत्व बताइए ?

Ans:- Fiscal deficit is an useful instrument for giving a direction to the economy

because.

I. It helps in increasing amount of capital expenditure in the economy.
II. Government can collect more resources for meeting out its expenditures.

राजकोषीय घाटे का महत्व – राजकोषीय घाटा अर्थव्यवस्था को दिषा निर्देष प्रदान करने के रूप में

एक उपयोगी उपकरण हो सकता है क्येांकि इसकी सहायता से

1. अर्थव्यवस्था में पूँजीगत व्यय की राषि में वृद्धि सम्भव हो पाति है ।
2. सरकार अपने व्ययों की आपूर्ति के लिए अधिक वित्तीय संसाधन जुटा पाती है।

10. What is meant by Balance of trade ?

व्यापार सन्तुलन से क्या अभिप्राय है ?

Ans:- Balance of trade is related to only visible items. Difference between the value

of total visible exports and imports of a country is called ‘Balance of Trade’ of

that country. Visible items include physical goods as machine, cloth, cement,

e.t.c

Balance of Trade =[export of visible items]-[Import of visible Items]

व्यापार सन्तुलन का सम्बंध व्यापार की केवल दृष्य मदों से है। किसी देष के कुल दृष्य निर्यात एवं

कुल दृष्य आयात के मूल्य में जितना अंतर होता है। उसे देष का व्यापार सन्तुलन कहा जाता है।

दृष्य मदों में भौतिक वस्तुएँ जैसे – मषीन, कपड़ा, सीमेंट , आदि सम्मिलित है।

व्यापार सन्तुलन =(दृष्य मदों का निर्यात)– (दृष्य मदों का आयात)

Long Answer Type Questions :

nh/k mÙkjh; i’u

funs’k & प्रष्न संख्या 11 से 15 तक दीर्घ उत्तरीय प्रष्न है तथा प्रत्येक के लिए 6 अंक निर्धारित है ।

Instruction :- For questions no 11 to 15 are long answer type and each question

carries 6 marks.

---

11. Explain the Geometrical method of price elasticity of demand with diagram.

माँग की कीमत लोच को ज्यामितिय विद्यि से सचित्र समक्षाइये

Ans:- This method is also called point method. To calculated elasticity of demand

at any point on the Demand Curve, a tangent on that point is drawn.

According to this method.

$$e_d = \frac{lower\ segment}{upper\ segment}$$

In given fig. to calculate elasticity of demand at point R on the Demand Curve

DD, a tangent AB has been drawn. RB is lower segment and RA is upper

segment. Thus, at point R, elasticity of demany will be.

$$e_d = \frac{lower\ segment}{upper\ segment} = \frac{RB}{RA}$$

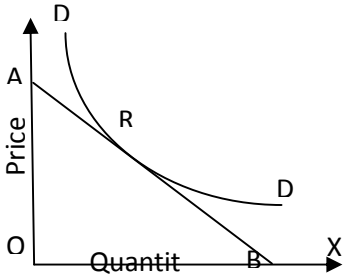

इस ज्यामितीय रीति में मांग वक्र के किसी बिंदु पर माँग की लोच ज्ञात करने के लिए उस बिन्दु पर एक स्पर्ष रेखा खीची जाती है। ज्यामितीय रीति के आधार पर

e_d =निचला भाग /ऊपर का भाग

संलग्न चित्र में मांग वक्र DDके बिन्दु R पर माँग की लोच ज्ञात करने के लिए बिन्दु R पर एक स्पर्ष रेखा AB खीची गई है। चित्र में RB निचला भाग तथा RA ऊपर का भाग है। अतः बिन्दु R पर मांग की लोच होगी ।

e= निचला भाग /ऊपर का भाग= $\frac{RB}{RA}$

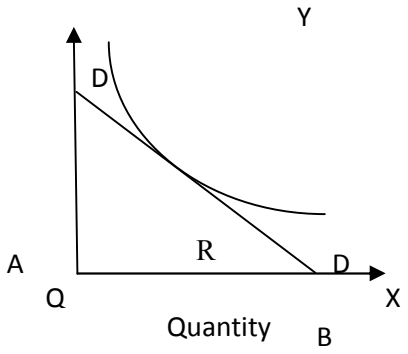

12. Explain the law of demand. What are its assumptions. ?

माँग के नियम की व्याख्या करें। इसकी मान्यातायें क्या है ?

Ans:- Law of demand : Law of demand explains quantitative relation between

prices of goods and quantity demanded. Every consumer has a psychology to

buy less amount or quantity of anything at high price and more quantity at low

price.Ceteris paribus (other things being equal), there is inverse relationship

between price of a good and quantity demanded i.e. When price is low,

demand is high.

In other words, there is an inverse relation between price of a good and its demand. When price increases demand decreses and vice versa.

Law of demand is 'qualitative statement' and not a 'quantitative statement. This law locates the direction of price and demand change and not the quantity of change.

Assumptions of the law of Demand:

Law of demand is based on few.

Assumptions these assumptions are:

1. Consumer's income should remain constant.
2. Consumer's taste, nature etc. should remain constant.
3. Price of related goods should remain constant.
4. Consumer's remain unknown with new substitutes.
5. There is no possibility of price change in future.

माँग का नियम वस्तु की कीमत और उस कीमत पर माँगी जानेवाली मात्रा के गुणांत्मक संबंध को बताता है। उपभोगता अपनी मनोवैज्ञानिक प्रवृति के अनुसार अपने व्यावहारिक जीवन के ऊँची कीमत पर वस्तु की कम मात्रा ख्रीदता है और कम कीमत पर वस्तु की अधिक मात्रा । उपभोक्ता की इसी मनोवैज्ञानिक उपभोग प्रवृति पर माँग का नियम आधारित है।

माँग का नियम यह बताता है कि ' अन्य बातों के समान रहने पर ' वस्तु की कीमत एवं वस्तु की मात्रा में विपरीत संबंध पाया जााता है। दूसरे शब्दों में, अन्य बातों के समान रहने की दिषा में किसी वस्तु की कीमत में वृद्धि होने पर उसकी माँग में कमी हो जाती है तथा इसके विपरीत कीमत में कमी होने पर वस्तु की माँग में वृद्धि हो जाती है।

स्पष्ट है कि स्थिर दषाओं में वस्तु की कीमत और वस्तु की माँग में एक विपरीत संबंध पाया जाता है।

उपर्युक्त समीकरण बताता है कि कीमत बढने पर माँग घटेगी और कीमत घटने पर माँग बढेगी ।

माँग के नियम की क्रियाषीलता कुछ मान्यताओं पर आधारित है जो निम्नलिखित है।

1. उपभोक्ता की आय में कोई परिवर्तन नहीं होना चाहिए ।
2. उपभोक्ता की रूचि ,स्वभाव , पसन्द में कोई परिवर्तन नहीं होना चाहिए।
3. संबंधित वस्तुओं की कीमत में कोई परिवर्तन नहीं होना चाहिए।
4. किसी नवीन स्थानापन्न वस्तु का उपभोक्ता को ज्ञान नहीं होना चाहिए।
5. भविष्य मे किसी वस्तु की कीमत में परिवर्तन की संभावना नहीं होना चाहिए।

13. What is meant by perfect competition? What are its main characteristics?

पूर्ण प्रतियोगिता से क्या अभिप्राय है। इसकी प्रमुख विषेषताएँ क्या है ?

Ans:- Perfect competition: Perfect competition is that market situation in which a

large number of buyers and sellers are found for homogeneous product. Single

buyer or the sellor are not capable of effecting the prevailing price and hence, in

a perfectly competion market, a single market price prevails for the commodity

Definitions.

1. According to leftwitch, “Perfect competitive is a market in which there are many firms selling identical products with no firm large

enough relative to the entire market to be able to influence market price"

1. According to Mrs. Joan Robinson, 'Perfect competitive prevails when the demand for the output of each producer is perfectly elastic.'

Characteristics or Features of prefect competition:

1. Large Number of buyers and sellers: Perfect competitive market has a large number of buyers and sellers and hence, any buyer or seller cannot influence the market price. In other words, individual buyer or seller cannot influence the demand and supply conditions of the market.
2. Homogeneous product: The units sold in the market by all sellers are homogenous in nature.
3. Free entry and exit of firms: In perfect competition any new firm may join the industry or any old firm may quit the industry. Hence, there is no restriction on free entry or exit of firms into/from the industry.
4. Perfect Knowledge of the market; In perfect competition every buyer has the perfect knowledge of market conditions. None of the buyers will buy the commodity at higher price than the prevailing price in the market. Hence only one price prevails in the market.
5. Perfect mobility of Factors: In perfect competition, the factors of production are perfectly mobile. Factors can easily be mobile from one industry to other industry without any difficulty.
6. No transportation cost: Transportation cost remains Zero in perfect competition due to which one price prevails in the market.

पूर्ण प्रतियोगिता – पूर्ण प्रतियोगिता बाजार की वह स्थिति होती है। जिससे एक समान वस्तु (Homogeneous product) के बहुत अधिक क्रेता एवं विक्रता होते है। एक क्रेता तथा

एक विक्रेता बाजार कीमत को प्रभावित नही कर पाते और यही कारण है कि पूर्ण प्रतियोगिता में बाजार में वस्तु की एक ही कीमत प्रचलित रहती है।

परिभाषाएँ–

1. प्रो॰ लेफ्टविच के अनुसार "पूर्ण प्रतियोगिता वह बाजार स्थिति है जिसमें बहुत सी फर्में एक समान वस्तुएँ बेचती है और इनमें से किसी भी फर्म की यह स्थिति नहीं होती कि वह बाजार कीमत को प्रभावित कर सके ।"
2. श्रीमति रॉबिन्सन के अनुसार " जब प्रत्येक उत्पादक की वस्तु की माँग पूर्णतः लोचदार होती है तो वह बाजार पूर्ण प्रतियोगिता बाजार कहलाता है।"

पूंर्ण प्रतियोगिता की विषेषताएँ

1. क्रेताओं और विक्रेताओं की अधिक संख्या–पूर्ण प्रतियोगिता बाजार में क्रेताओं और विक्रेताओं की संख्या बहुत अधिक होती है जिसके कारण कोई भी विक्रेता अथवा क्रेता बाजार कीमत को प्रभावित नहीं कर पाता। इस प्रकार पूर्ण प्रतियोगिता में एक क्रेता अथवा एक विक्रेता बाजार में माँग अथवा पूर्ति की दषाओं को प्रभावित नहीं कर सकता ।
2. वस्तु की समरूप इकाइयाँ–सभी विक्रेताओं द्वारा बाजार में वस्तु की बेची जाने वाली इकाईयाँ एक समान होती है।
3. फर्मो के प्रवेष व निष्कासन की स्वतन्त्रता–पूर्ण प्रतियोगिता बाजार में कोई भी नई फर्मों के उधोग में प्रवेष कर सकती है। तथा कोई भी पुरानी उधोग से बाहर जा सकती है। इस प्रकार पूर्ण प्रतियोगिता में फर्मो के उधोग में आने जाने पर कोई प्रतिबन्ध नही होता।
4. बजार दषाओं का पूर्ण ज्ञान–पूर्ण प्रतियोगिता बाजार में क्रेताओं एवं विक्रेताओं को बाजार दषाओं का पूर्ण ज्ञान होता है। इस प्रकार कोई भी क्रेता वस्तु की प्रचलित कीमत से अधिक कीमत देकर वस्तु नहीं खरीदेगा । यही करण है कि बाजार में वस्तु की एक समान कीमत पायी जाती है।
5. साधनों की पूर्ण गतिषीलता–पूर्ण प्रतियोगिता में उत्पत्ति के साधन बिना किसी व्यवधान के एक उधोग से दूसरे उधोग में (अथवा एक फर्म से दूसरी फर्म में) स्थानान्तरित किये जा सकते हैं।
6. कोई यातायात लागत नहीं –पूर्ण प्रतियोगिता में यातायात लागत शून्य होती है। जिसके कारण बाजार में एक कीमत प्रचलित रहती है।

14. What do you mean by commercial bank? What are the limitations of its credit

creation?

व्यापरिक बैंक से आप क्या समझते हैं ? इसके साख निर्माण की सीमाएँ क्या है ?

Ans:- Commercial bank: Commercial banks perform general banking functions. A

commercial bank is an institution which deals with money credit . It accepts

deposits from the public, makes the funds available to those who need them

and helps in remittance of money from one place to another.

Limitation of credit creation: credit creation by commercial banks has following limitations:

1. Volume of money in the country- currency is the basis of credit. Higher the currency money in the economy, greater will be the credit creation by banks and vice versa .
2. Liquidity preference of Money- if people want to keep their money in cash with them, bank deposits will decline and consequently credit creation is contracted .
3. Banking Habits: Higher the banking habits among the people, more will be the credit creation, banking habits leads to more demand for bank loans and consequently more credit creation will take place.
4. Ratio of cash reserves to deposits:- Every bank has to maintain a certain ratio of cash

reserves to deposit. If this ratio rises, credit creation is contracted and vice-versa.

5. Interest Rate- Credit creation is also influenced by rate of interest. At higher interest rate, less credit creation will take place and vice-versa.
6. Banks deposits with the central Bank:- Every bank has to keep some deposits against their liabilities with the central bank. If central bank raises this ration, credit creation gets squeezed and vice-versa.
7. Credit related policy of Central Bank:- credit policy of central bank also affects credit creation. Central Bank can adopt various measure of credit control or expansion, as required.

व्यापारिक बैंक – सामान्य बैंकिंग कार्य करने वाले बैंक को व्यापारिक बैंक कहते हैं। इन बैंक का मुख्य उद्देष्य व्यापारिक संस्थानों की अल्पकालीन वित्तीय आवष्यकताओं की पूर्ति करना है। व्यापारिक बैंक धन जमा करने, ऋण देने ,चेकों का संग्रहण एवं भूगतान करनें तथा एजेन्सी सम्बन्धी अनेक काम करते है।

साख निर्माण की सीमाएँ– व्यापारिक बैंक द्वारा किये जाने वाले साख निर्माण की सीमाएँ निम्नलिखित है।–

1. देश में मुद्रा की मात्रा – चलन मुद्रा साख का आधार होती है। देष में नकद मुद्रा की मात्रा जितनी अधिक होगी बैंकों के पास नकद जमाएँ उतनी ही अधिक होंगी और बैंक उतनी ही अधिक मात्रा में साख निर्माणं कर सकेंगें।
2. मुद्रा की तरलता पसन्दगी – यदि व्यक्ति अपने नकदी अधिक रखते है तब बैंक में जमाएँ घटती हैं और साख निर्माण का आकार घट जाता है।
3. बैंकिंग आदतें – जनता में बैंकिंग आदतें जितनी अधिक होती है। बैंकों की साख निर्माण शक्ति उतनी ही अधिक होती है। बैंक साख निर्माण अधिक मात्रा में तभी कर सकतें हैं। जब अधिक बैंकिंग आदत के कारण बैंकों से अधिक ऋण की माँग की जाती है। विपरीत दषा में साख का निर्माण कम हो जाएगा.
4. जमाओं पर नकद कोष अनुपात – प्रत्येक बैंक को अपनी जमा का एक निष्चित भाग नकद कोष के रूप में रखना पड़ता हैं

अतः बैंक साख का निर्माण कम करेंगें या अधिक, यह नकद कोष अनुपात पर निर्भर करता है। यदि नकद कोष अधिक हो तो कम साख का निर्माण होगा और यदि नकद कोष अनुपात कम है तो अधिक साख का निर्माण होगा।

5. ब्याज दर – बैंक की साख की मात्रा प्रायः ब्याज की दर पर भी निर्भर करती है। यदि ब्याज की दर ऊँची हो तो साख की मात्रा कम हो जाती है। इसके विपरित, नीची ब्याज दर प्रायः साख की माँग को प्रोत्साहित करती है। और साख स्फीति हो जाने का भय रहता है। ब्याज की दर साख नियंत्रण का एक महत्वपूर्ण साधन है।

6. बैंकों का केन्द्रीय बैंक के पास जमा – बैंकों को केन्द्रीय बैंक के पास अपने दायित्वों का कुछ भाग रक्षित कोष के रूप में जमा करना पडता है। जब केन्द्रीय बैंक व्यापारिक बैंको द्वारा रखे जाने वाले कोषों में वृद्धि देता हैं, तब उनके नकद साधन कम हो जाता हैं और फलतः वे कम साख निर्माण करते है।

7. केन्द्रीय बैंक की साख सम्बंधी नीति– साख का निर्माण की मात्रा केन्द्रीय बैंक की मुद्रा या साख नीति पर भी निर्भर करती है। कारण यह है कि (क) केन्द्रीय बैंक के पास देष में मुद्रा की मात्रा को प्रभावित करनें की शक्ति होती है। और (ख) वह बैंकों की साख के संकुचन और विस्तार की शक्ति को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से प्रभावित कर सकता है।

15. Explain Progressive, proportional and Regressive Tax with examples?

प्रगतिशील, आनुपातिक एवं प्रतिगामी कर को उदारहण सहित समझायें –

1. Proportional tax:- taxes in which the rate of tax remains constant whatever the size of the tax base may be for example, if the rate of income tax remains 20

percent whatever the size of income is, it will be a proportional tax.

Table 1: Proportional tax

Income (Y) Rs.	Tax rate %	Tax Amount
100	20	20
1000	20	200
10000	20	2000
100000	20	20000

1. Progressive Tax: Taxes in which the rate of tax increases with the increase in the size of tax base, are called progressive taxes. In India, income tax is a progressive tax.

Table 2: progressive tax

Income (Y) Rs.	Tax rate (%)	Tax Amount (Rs)
1000	20	200
2000	30	600
3000	40	1200
4000	50	2000

Regressive tax: when the rate of tax decreases as the tax base increases the taxes are called regressive taxes. The burden of such taxes falls more heavily on the poor than on the rich.

Table 3: Regressive Tax

Income (Y) Rs	Tax rate (%)	Tax Amount (Rs)
1000	30	300
2000	20	400
3000	14	420
4000	12	480

अनुपातिक कर – आनुपातिक वह कर है जिसमें सभी आय स्तरों पर एक ही दर से कर लगाया जाता है अर्थात चाहे आय घटे या बढे परन्तु कर की दर एक समान रहती है। इस प्रकार आनुपातिक कर की दर निर्धन व्यक्तियों एवं धनी व्यक्तियों के लिए एक समान रहती है।

आनुपातिक करारोपण

आय (Y) (रू॰)	कर दर (प्रतिषत में)	कर की मात्रा (रू॰)
100	20	20
1000	20	200
10000	20	2000
100000	20	20000

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि विभिन्न आय स्तरों पर कर की दर निष्चित रहती है। इसमे आय में कमी या वृद्धि का प्रभाव नहीं पड़तां।

(2) प्रगतिषील कर – प्रगतिषील कर वह कर है। जिसकी दर आय बढने के साथ बढती जाती है। प्रगतिषील कर में कम आय स्तर पर कम दर से तथा अधिक आय स्तर पर अधिक दर से कर आरोपित किया जाता है।

प्रगतिशील करारोपण

आय (Y) (प्रतिषत में)	कर दर (प्रतिषत में)	कर की मात्रा (रू॰)
1000	20	200
2000	30	600
3000	40	1200
4000	50	2000

(3) प्रतिगामी कर – प्रतिगामी कर उस कर को कहते है, जिसका भार अमीरो की अपेक्षा गरीबों पर अधिक पड़ता है अर्थात जैसे जैसे कर येाग्या आय बढती जाती है, कर की दर घटती जाती है।

निम्न तालिका के अंकों से स्पष्ट है कि आय बढने के साथ–साथ कर की दर में कमी होती चली गई है।

प्रतिगामी करारोपण

आय (Y) (प्रतिषत में)	कर दर (प्रतिषत में)	कर की मात्रा (रू॰)
1000	30	300
2000	20	400
3000	14	420
4000	12	480